

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार II-170

२३३
२३३
२३३

२३३ नमः श्री गुरुवे नमः ॥ प्रागर्हते विना नमः ॥ ॥
अथ गुरुं गमयन् नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
वत्तु तदियं स गः सध्या स त्रु माईः श्री वत्तु स ल गुरु वि
जयिया २ गुरु मां व नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
हृत्तु विना जिताः श्री गुरु ता हृत्तु स नमः स नमः नमः नमः

२३३ नमः श्री गुरुवे नमः ॥ प्रागर्हते विना नमः ॥ ॥
अथ गुरुं गमयन् नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
वत्तु तदियं स गः सध्या स त्रु माईः श्री वत्तु स ल गुरु वि
जयिया २ गुरु मां व नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
हृत्तु विना जिताः श्री गुरु ता हृत्तु स नमः स नमः नमः नमः

गऊ सतनाः पूषतनाः अस्वतनाः सुतनाः
 खर्गसमनिगतनवकुसुतनाः वांसद्विनिधनः
 सयुक्तः ॥ ६ ॥ नागयमजतिः नागमाथा ॥ अतिरज
 नससतजावनमाइः मद्रुमलुसवकुसायाश्च
 पंजरसतजातसयनाः पतिरेसीद्वद्रुवनाया ॥ ७ ॥

दामार्कनयियाश्च अन्यकन्या आसिगमद्वद्रुवकु
 नयियाश्च वज्रवादि आसिगमसंस्त्रकनयियाश्च
 कुतिसवित्रवित्रनयनः ऊहिश्च ऊहिश्च अस्वसमभन
 अनूदतसर्वदेवः वज्रखादभदिगः मत्रतिवयनसं
 तावश्चिउवनउक्तप्रकसायतनासाश्चिह्नवन

नचिनद्यन्ः पचयल्लवउयसाहिना २ पंचास
 तपंचनल्लपंचेष्टपदिः पंचवृद्धिनिष्ठादकंः नजा
 अक्षतइवीकुल्लससदिनारवजाः चार्थमनुन्यासा
 दाकिनिसास्माखल्लसादात्रुपिनिः विप्रविप्रम्वत्र
 संशुकारगततुत्रुचत्रनेः केनसाचननेः अतिमनु

सुखरुसदाउमदा २ नमाहं २ प्रह अखल्लमल्लत्राका
 नहानतास्त्रुत्रसंहभा ॥ ६ ॥ त्रायावपुनत्रनिनः
त्रइऊमान ॥ कूसात्रिप्रताऊनः पंचेष्टानल्लतावः कं
 कारकप्रविजसुत्यन्ना २ निवासितमदाकात्रतवमा
 मकिस्त्रसुल्लसिः नवजीवना २ नमामि श्रीदेवीया

२५
 २५
 २५

गुणिलक्षिः वजासुते खय्य अरुणादकं २ आसिठप
दसषरु निमास लक्षिः सकसूरवति नयनः अत्र
नवर्णः २ अक्षौदनवाहू क्षत्रिणादकः कनवात्रसनक
पः दितियकत्र २ पाभांकु नवर्षत्रः धंजगदाघं थः वः
त्रयकपथमसर्वः अयउद्धतजः रुठकधनूः वज्रवं

अखपांगकमभुत्र २ विभूत्रसूगत्रवज्रवानः गलयः
किनदनकमोरुत्ररहं रुद्राक्षीरकात्ररुत्रनवर्णः ३
क अरुणाकात्रतावयनि २ नवकत्रूनामयः दूवामज
वालूनीः यत्रमायवज्रलुः गथध्वयने ॥ कु ॥ रागस
धूमनः गात्ररय ॥ नीलवर्ण वात्रूनीदेवीः चक्रिकुंठल

कथिकाः साचकुसुमषेत्रे ४ ह विना २ न सा मि २ देवी आ
 मास की सुमानमे ४ ह कि संपु जिना २ स्व स्व वी जा
 त्रे ४ सस्य न्याः नव जी वन सस्य सुतीः पंके व म
 हत पंच जि न स रूपाः सुता सस्य नत्रे ४ वल्लि नो २ ज
 सम २ उरु पयि न नखः २ नूत न सिद्धी म ज द्वि सि

रणी न व ४

द्वि ॥ कु ॥ राग मधुमतः नात्र इ ऊ मान ॥ पीत व र्क
 मास की देवीः विष्णु व्यापिताः २ हत पा न न य ना र
 ही देवी २ नव जी वन नै सा क्य सस्य सुतीः स्व स्व वी जा
 क सस्य न्या २ चक्रि क सुक वि साचकुसुमषेत्राः स
 क बग प विरु पिता २ न सा मि श्री वा न ही दे वी स न न्य
 तीः प ऊ या मि स ना वा कि ना र न त उ न च न खः प नः

२२ कौ व ७६

मासित ग्वाः अ नूतन सिद्धि संपदं ॥ कु ॥ रागनाटक
नात्र इह माना ॥ त क व त न तिय लाय न संतु गीः अक्षा
द न ह उ रु स न नु कि त ७ ॥ कु ॥ उक्त देवी वा त्र सी
मास कि देवी ॥ उ ग न पु मा नि न म य न न संला ॥ कु ॥
आगम वेद पुत्रा न व म न र ॥ उ म द का ग न उ व
द म् ॥ कु ॥ पं क व द स र प स उ म र स द सु जा मि नि

२३ नि न व ७६

सेया हे न व नु हे न व ॥ कु ॥ ग न ग न व न नि स ग
न व त्रिया र त न ति क न र स त न ४ स न य ॥ कु ॥
राग क हूः ना न व ठ क का त ॥ ह त्रि त व हू गीः वि न य
न स नु गीः न व जी व न रा व न ल म ता ॥ उ म देवी मा स
कि वा त्र सी देवी ॥ कु ॥ अक्षा द न ह जाः रु न न नुः
कि त ७ ॥ प च व द स र प स उ म र स द सु जा मि नि

२०५ कृदह

हकाग्रनहगतवर्षः साकासगंधनामनः साकास
वीजहताः अमृताकासा ॥ कु ॥ मतमृत्तुचत्रहनि
योगतधत्रिया २० नयिसिद्धिवज्रचत्रितगीता ॥ कु ॥
धनयातपूजा ॥ ० ॥ रागगंधत्रहसविः नात्रउवा ॥
आकृदहनपंचकनस्ररूपः पक्षमियात्रसपंचः
मत्रिपूजिया ॥ कु ॥ उक्तदेववत्रिसायातिउ

२०६ कृदह

वनस्त्रि ॥ वित्रमत्रापकसमया आनउ ॥ कु ॥ वित्रं
वित्रमत्रसमया १ नउ २ कनकमत्रावक्रहदया ३
नउ ॥ कु ॥ पंचवक्रपंचकंधस्ररूपः देवास्रमत्र
पुमादिनहदया ॥ कु ॥ उ आहं ऊ खं साधनकत्रि
नः उमत्रय ६ धनिवित्रमा १ नउ ॥ कु ॥ रागस्र
पुसिहनातकः नात्रमुकनत्रि ॥ पुदससनात्रहदि



धमरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार II-170

२३५५५५

हृदय ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
विनाशिताः विह्वलसवनाचनप्रकरया ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
वसनीः वज्रवेनाचनिः श्रीदवीविसिद्धि विह्वलमाया ॥ कु ॥
नातिमहत्समाइ उद्यमम्यत्रि विनिवक्तु तदितिनितिनितिन
यना ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
सुखनठानिरूपा ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥

२३५५५५

श्रीवज्रयागिणीयादभनना ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
नरुद्धमान ॥ नमः ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
नृणा ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
धनसुत्रदसुहादियंकारुगलूणा ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
गधसुः वज्रघट्टासूत्रानयमूत्रति ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥
उग्रः सादियवज्रसुत्रपत्रमभस ॥ कु ॥ **गगन** **गगन** **गगन** ॥

२
वि
प्र
५

इहमात्रा॥ विचक्रुः सत्रविसृजिभिसंभुसमाइहिति शाननुसूत्रः
निधनार्थवज्जवात्रादिशालिगनासंखनानात्रसिमहाठना॥
तेनाहं हंः न नाहं हंः न नाहं न हं ॥ ३ ॥ कु ॥ नीनवर्णवर्णवर्णकः
पुनिसुखनिधनः पुनिसमाहं ननुसूत्रनिधनार्थविभवज्जवर्ण
चक्रुः हामकूठधनः दातु शत्रुनसूत्रनिधनार्थवज्जवर्ण
जवर्णदसत्रुषसागधनः विनसाननुसूत्रनिधनार्थकनति

२
वि
प्र
५

कयात्रयनसूपादाभधनः विचक्रुः नीसधनार्थदिगंविदिगं
काकायादिउमदादियानः सदजाननुसूत्रनिधनार्थनसामि २
ग्राचक्रुः संखनसत्रुचननश्राधिता॥ ५ ॥ नागकक्राना॥
नासयक्रुः कात्रा॥ इतिविषनाउग्रपचंभः प्रियसुखमठहजचन
भालिठा २ भन्यासिगनसत्रुतत्रभः वज्जवर्णधनाननभीसमा
सा॥ ५ ॥ नसामिग्रीनेसाकुविजयाः विभवनाथविभव्यायिताः

वृद्धधर्मसंघयासितपुनिहानपादसुत्रनक्तिनउत्रासदेअस
विम्वनाथिविअयापिना॥त्रकृष्टिनायनकुठअतावाःपुनि
दूखदसकुठविद्युसहागा॥खगयूसुकधामात्रसंहागाःवि
लुंविक्कुर्मपुजासितकिन॥यत्रसूपाभधामात्रावनदहाःस
वेकुठविहयादसुत्रकारदानवनागामानवदहाःविहहूट
धम्मसयलसुत्रकाःकायवाठकविहधम्मनतत्रकाःकिविष

२५
२५
२५
२५
२५

दहानिर्मत्रमत्रीलाःतवतयदुत्रधमीनतवन्तिःभनन्
द्वचसुहामित्रगतधसिया॥कु॥नागवठककात्र॥निसुह
कात्रपुठलिनकिन॥२३उद्धयिगत्रकमाश्रीदेवजसायाः
जगतमा३ककासिगानेनासादवि॥नीत्रवर्द्धदेविकत्रकि
कपात्रधना॥कु॥काधकिनदिनिआसिगभसमाधिरणा
उभउकनाठकधत्रिया॥कु॥रसविहविनयनसूडात

२५७३

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

२४५।७५

सिंउ नरसिउ नर इ इ नू वा ऊ यिया यियाः च उ सप्तक सुसिः
 सिताः कर्षू नरा व न यिया यिया र मा लिया यि धू न सा त्रि उ न र
 न दि वा नू र वा ऊ यिया यिया र य स च कु न क न र नः सु र्द्ध सु र्द्ध
 न मू निया यिया र मि न सु र्द्ध अं ग ह दा व यिया र न दि उ स न
 व न्य प्र न मा मिया ॥ ६ ॥ न ग र न विः न र इ ऊ मा न ॥ ग जा उ न
 उ र्द्ध दा थ ध सियाः के म न वू त्रि भ अं ग वा न र द स नू क न नि

कुथप्रतिभूतवासरवद्वांगकपात्रुनदे॥ कु॥ श्रीसंघनादाः
 यवाकृदिउम्रउम्रुत्रात्रुनदे॥ सानयिनवापियासाप्रमाया
 सासुतश्चवात्रसिन्ना२पोमयुवुर्कमूढदायसदाथधनिया
 उम्रप्रसितमात्रा२विस्वकुत्रि२अद्वचनुजठरुतः॥ व्याद्युः
 चर्मषठमूडा२आनिठयत्यातननवाययिप्रस्रनः॥ कात्रिना
 हविदिनमूडा२नित्रदिनेनादिनकनकामूडाः॥ चउमूख

२३ गजग

अतिविकृतात्रुनदे॥ चूतिसंवित्रवित्रस्रननायकः॥ रिनि
 चकुसदावित्राः॥ कनूनसुगागवित्रवित्रस्रनः॥ उजयिसय
 तससात्रुनदे॥ कु॥ नागहोत्रवि॥ नागनुकननि॥ जयजंवा
 चूतिसयत्रभूसाताः॥ अखयउ॥ ४खसंदात्रही॥ कु॥ नूनड
 नन्यानदादहायुनकः॥ नासयीमात्रनित्रवात्रुनदे॥ २जिनप
 यदयानिदकहायुनकः॥ जिनऊननिवठयागिगी२जय२

तस्मात्ता २ सा त्रिंश य न व त स द स य न १ क धू न त त त्र यि नां चो
 त्रा २ ग ग न नि त्रा वा त्री त्र व धि त्र ज्ञा दाः मे त्र म ७ सु त द त्रि न्ना २
 वि य ध नू र व द्वा र्णः चूा दि ग त स म्ब तः य यि स यि स न्य त व नाः
 त्रा २ द स वि त्रा दि त्र व ज वा त्रा दि २ उ क्त्वा वि नू द वि अ ध त्रा २
 ग व नि त्रि त्रा व ज या गि नीः सु ग ग त्र च त न आ त्रा ध २ स म
 या आ न पु रु सि ग त म ७ त स म्ब त्र व ज वा त्रा दि ॥ ध्रु ॥

त्रा ग म्ब ७ गी त्री ॥ गा त्र च क त त्रि ॥ न कि व ७ त क कि त्रा व क
 म ष त रू मि त गि त्रि व नू ड न त सि त मा त्रा २ स ग च कि च वि त्रः
 या त स वि उ वि त ग ग ग त्रा त्रि व नू सि वा त्रा ॥ ध्रु ॥ अ म्ब
 गी द नू व द मा त्रु का त्राः २ ग ना थ स द ज उ त्रा त्रा २ व ज क त्रा त
 २ हा थ ध त्रि याः क थ दि त रू र व द्वा र्ण २ स रू त ज गी ती क म त्र
 वि दा सि ग त्रा म हा स र व म त्रि य सा द द ज वा त्रा दि आ सि ग म स

२३
 २३
 २३

मन्त्रनां क्रियार्थं विद्वत्संघः वाचुः त्रिकांशयुक्तिकिदं किदं न
वर्धुत्तुजं नमः परमादं रत्नं जं संवृद्धिं त्रेयांशयुक्तिकिदं
पादं नूतनं च त्रेयांशयुक्तिकिदं रत्नं आतिशयं दत्तं वनित्रवर्धुवि
त्रासयिष्यन्त्यकसूना ॥ ध्रु ॥ नमः नमः ठकां नमः उठि ॥ वातिचन
नवाउपयिचउमात्रा ॥ अथ वदन्त्यनपुतिमुखं नयना ॥ ध्रु ॥
नाचयिष्यादं नूतनं सासादविस्दिता ॥ अक्षजगिनीमहा

॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नमः नमः नमः ॥ ध्रु ॥ नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
धनयिगसकं ॥ ध्रु ॥ चक्रिकुत्तुजं नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
निविशुषनमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
दिताः पिशुवनसचराचसकसूत्रा ॥ ध्रु ॥ नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
नामः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः
निवर्धनमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः

नि नमामि अधस्तत्राय सदासुनि॥ कु॥ ददि नषिदि त्रीधनवा
 सवृत्तिकाया नविचित चिवत्रधउ उवव्यापिता॥ कु॥ कान्
 नमानसलिसत्रदिदयासलउधननत्र तयपदाना॥ कु॥
 उत्रसजत्रससुगन वत्रस्यविताः उक्तसमत्रनमा कूपदाना॥ कु॥
 रागगंधनरहेतवि॥ तात्रकु नि॥ इत्रसिप्रसकूत किप्रतिमलिः
 तासितः चत्रनरुग्मं रसादियवजसल्यपत्रसम्यत्रं रयइयदं र

गधसुनिवदुपिथिक अगतददधन॥ कु॥ चात्रितुदुग
 सचात्रिउद्यंगतपमं रुग्मं॥ कु॥ ऐहवन्नजात्रितसूत्रः
 अनूत्रायनविनयवति॥ कु॥ नाचयिवजसल्यः यत्रसम्य
 त्रं श्रीनयवनि॥ कु॥ तस्मिंसदमु विननदमसूयसंदास्य
 वनि॥ कु॥ वरुदुदत्रयविभन अनूत्रायननल्यवनि॥ कु॥
 रागसात्रसि॥ तात्रकु ठि॥ धर्मांगमत्रिचलुक सासि रविषन

२५ मा ३५ ग

पिर्गलकमः लिखयन्तः ॥ ध्रु ॥ उर्जयियाः हं हं न क न क
त्रासि रत क न स द ग न र नि ॥ पु नाना व्यात्रवः स हो व सि य न ॥ ध्रु ॥
स स या त र क निः आ ग म व सि द वी र व उ त्रि र व ड मू ख र या त्रा ध्रु ॥
मि न क का त्री च्छु गा व सि म्भ ता र वा द्दि क न कः स म या कू न र
या त्रा ॥ ध्रु ॥ गौ ड म हा व सि पि ठि व न ग न र म ल्प मा न स म ज सः
मू ढि ग १ १ हा त ॥ ध्रु ॥ गौ ग मा ल व ॥ गौ त मा ० ॥ व जि नी धा त्रि वे

२५ मा ३५ ग

ना त्रि च त्रा त्रि नी सि धि नी व्यां धि नि उ म्भ क उ त्रा कि णी ॥ ध्रु ॥
न मा सि धी या ग म्भ त्र हा न म्भ त्री ॥ रि नि र न र द वी गी उ व न प
वि स्या ॥ पू र्व उ र्ग त्र प म्भु स द द्दि म्भ दि ग द वी र त्रा की नी णी की
० ॥ व ड सि क वा जि णी र व उ त्र दि ग उ म्भ रु स म नु द वी र ति नि र
न न द वी ना च उ द वी र ह त्रि द न व र्मा ० ० ॥ लु अ म्भ त्र म नः वा द
म या गि नी स म त्र सं ता य ॥ ध्रु ॥ गौ ग म्भ उ गि त्रि ॥ गौ त मा ० ॥

२५
१०
२५

देवि ससुवत्र विनासि के सा २३ उथ तत्रादास भुत्रायाइ
गमना ॥ ध्रु ॥ उगतनि वासियात्र २ अमियः अमियानि नम
नदेला २ सदेउ सुन्दरि लेया जिन हूत्रः पुविमना चयित्रा ॥ ध्रु ॥
पुचउथा गिनि देनामत्रा २ वजवात्रादि आसि ग भकात्रमां
चयित्रा ॥ ध्रु ॥ उध हूत्रात्राक नू भकवात्र २ उय आसिः
गभनित्रव हूवात्रः नाचयित्रा ॥ ध्रु ॥ उथ तत्रादा आसः
मयत्रायाः रुगमत्राः रुगभनिवाहिरात्रा ॥

नाग मधनरुदिवि

॥ आः देरुग ॥ अरु स्वाहा ॥ मनुवि सरवउ चात्र २ पूजापूजि त
पूजसंरावः तत्तसात्रपरवकुत्रा ॥ ध्रु ॥ स्वरववाहियात्रममभ्रनि
वल्लिपूजात्रः घघघातय २ विघ्नहृत्रः पंचामियात्रसपंचसहृत्रि
नयंचलानसर्ववनिना २ सर्वज्ञकृताकसहृत्रपतशपिसाचात्र
अपत्मात्रः दाकदाकिनी इयि अषुसमभ्रनः ०० उवः त्रि
गृक २ उत्र २ समयात्रकृदु दानपतित्रः सर्वसुखसेयदसाति
त्र २ उथ वज्रथचरुत्रथपिवथत्रिष्टुथमागिकाएवकुत्र

दानयगिसर्वकार्यसिद्धिः मनोऽथ सर्वस्वपदं धामिनि २
आनसंसात्रतथगतः वयनः साहाय्यं कान्तं वंदुना ॥ ३ ॥
गामयन्ति ॥ ननु ॥ वामरुद्रपत्रः दहिनकरिः पापनाप
नमन्नुमासादृषिः ॥ नीचयिषु कुरुनि वदुनागिनी ॥ ४ ॥ निनि
ननु देवी तिस्रवनपवित्र ॥ ५ ॥ स्मृतस्मृतमनदेवीः नीरुद्रन
देवीः सन्ध्यातु देवी ॥ ६ ॥ कालम्बु कुरु यिपास
नवीधियाः नागद्वयमाह कुरुनि न ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥

हानदेवी तानुना देवी मादुना गदेवी तुङ्गययिसुनना ॥ ९ ॥
नागनामकति ॥ तालना ० ॥ ॥ सुप्रतिमं भूतं सुभुलचक्रा ॥ १० ॥
नक्रप्रपाकविमान २ सुप्रतिनादिन तुङ्गनकः तद्वनतगी
नवननमनाग ॥ ११ ॥ तनाहं तनाहं ३ तना तनहं हं ॥ पंच
वृक्षमकसर्वरुद्रायः पश्य हं नातकविगकुदिव्य ॥ इति हि
पञ्च महासूनाना ॥ नृपति गीतवननमनाग २ सावकया
नमस्यति तलिहः माथ चतिचन अथ तत्तचतिचन वाधि

चात्रेचत्र वाधिगु नक २ असुनिदानह वषष्ठयहः चधकिर
नेज्या पात्रे भावि नः नना वृद्ध २ वाधिविलोवन यावि पत्रि
मिन् देहयत्रा ॥ ५ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
यनचतुवक्त विहात्रा २ कनक एव वि ॥ नमः गत्र हाभा
५ ॥ हासकत्रया हास नहि च उमात्रा ॥ नागद्वय माला व
धि क्रादिया ॥ ५ ॥ वामदहि न कनक सूत्र वत्रियात्रा २ नमि
नवज्ञान गजशक्तिक त्रिया ॥ ५ ॥ प्रह्लादयै न उपायि न व
र्हि २ नविससि चापि पात्रा नान्वा यै वत्रिया ५ कनक
वात्र न अह नत्र हा म २ वायु सै व ह दिन विया सै वात्रा
५ ॥



पुत्रत्राया रुग्णप्र॥ उग्ननिवा सियात्र॥ ४॥ अथ॥ ॥
संवत् २०५ मिति रुग्णप्रयायक ससिधयदाव
वात्रयोवजा शार्ङ्गः श्रीसुक्लिननुगता रुक्मिणीयादिशाः
कुवाहालयः श्रीनित्यागः यमनदात्रया नदयः
काशत्र॥ ४॥ या॥ ॥ ममहृदः अधवा अरुधवम
ममदावनदीयने॥ अथपुस्तकसुनानं त्रासयायम३४॥